पतरस और अन्द्रेयास को यीशु ने कब बुलाया?

NURU YA UPENDO www.wingulamashahidi.org | 1

प्रश्न:

लूका 5:1–7 में हम पढ़ते हैं कि यीशु ने पतरस और अन्द्रेयास को तब बुलाया जब वे गलील की झील के किनारे मछली पकड़ रहे थे। लेकिन यूहन्ना 1:35–42 में ऐसा लगता है कि वे पहले ही यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाले के साथ रहते हुए यीशु से मिल चुके थे।

तो क्या इसका मतलब यह है कि बाइबिल में विरोधाभास है?

उत्तर:

बिलकुल नहीं। यहाँ पतरस और अन्द्रेयास के जीवन की दो अलग-अलग घटनाएँ बताई गई हैं। बाइबिल अपने आप का विरोध नहीं करती, बल्कि अलग-अलग लेखकों के द्वारा एक ही सच्चाई को अलग दृष्टिकोण से स्पष्ट करती है।

जब हम इन घटनाओं को उनके ऐतिहासिक और आत्मिक संदर्भ में समझते हैं, तो यह साफ दिखाई देता है कि ये दोनों विवरण एक-दूसरे के पूरक हैं, न कि विरोधी।

आइए, इन दोनों घटनाओं को क्रम से समझते हैं:

1. पहली मुलाकात — यूहन्ना 1:35–42

यह वह समय है जब अन्द्रेयास और पतरस पहली बार यीशु से मिलते

पतरस और अन्द्रेयास को यीशु ने कब बुलाया?

NURU YA UPENDO www.wingulamashahidi.org | 2

हैं।

“दूसरे दिन फिर यूहन्ना और उसके चेलों में से दो जन खड़े थे।
और उसने यीशु को जाते देखकर कहा, ‘देखो, यह परमेश्वर का मेम्ना है।’
उसके दोनों चेलों ने उसे यह कहते सुनकर यीशु के पीछे हो
लिए…
अन्द्रेयास, जो शमौन पतरस का भाई था, उन दोनों में से एक था जिन्होंने यूहन्ना की बात सुनी और उसके पीछे हो लिए थे।
उसने पहिले अपने सगे भाई शमौन को पाकर उससे कहा, ‘हम को मसीह मिल गया है’ (जिसका अर्थ है, अभिषिक्त)।
और वह उसे यीशु के पास ले आया…”
(यूहन्ना 1:35–42)

इस घटना में हम देखते हैं कि अन्द्रेयास और एक अन्य चेला (संभवतः स्वयं यूहन्ना) यीशु का अनुसरण करना शुरू करते हैं, क्योंकि उन्होंने यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाले से सुना कि यीशु “परमेश्वर का मेम्ना” हैं।

अन्द्रेयास तुरंत अपने भाई शमौन (पतरस) को बुलाकर यीशु के पास ले आता है।

पतरस और अन्द्रेयास को यीशु ने कब बुलाया?

NURU YA UPENDO www.wingulamashahidi.org | 3

यह उनकी पहली पहचान और व्यक्तिगत मुलाकात थी—लेकिन इस समय यीशु ने उन्हें सब कुछ छोड़कर अपने पीछे आने के लिए नहीं बुलाया था।

2. चेलापन के लिए बुलाहट — लूका 5:1–11

कुछ समय बाद, यीशु फिर से पतरस और अन्द्रेयास से मिलते हैं—इस बार जब वे मछली पकड़ रहे होते हैं—और उन्हें एक विशेष बुलाहट देते हैं।

“जब वह गन्नेसरत की झील के किनारे खड़ा था… तब वह शमौन की
नाव पर, जो किनारे लगी थी, चढ़ गया…
जब वह बोल चुका, तो शमौन से कहा, ‘गहरे में ले चल, और मछलियों के लिये अपने जाल डालो।’
शमौन ने उत्तर दिया, ‘हे स्वामी, हम ने सारी रात परिश्रम किया और कुछ हाथ न लगा; तौभी तेरे कहने से जाल डालता हूँ।’
जब उन्होंने ऐसा किया, तो मछलियों का बड़ा झुंड घिर आया, और उनके जाल फटने लगे।”
(लूका 5:1–6)

इस चमत्कार के बाद यीशु ने उससे कहा:

पतरस और अन्द्रेयास को यीशु ने कब बुलाया?

NURU YA UPENDO www.wingulamashahidi.org | 4

“मत डर; अब से तू मनुष्यों को पकड़ने वाला होगा।”
“वे नावों को किनारे पर ले आए और सब कुछ छोड़कर उसके पीछे हो लिए।”
(लूका 5:10–11)

यह वह निर्णायक क्षण था जब उन्होंने केवल यीशु को जानने तक सीमित न रहकर, अपना सब कुछ छोड़कर पूरी तरह उनके पीछे चलने का निर्णय लिया।

उनका जाल छोड़ देना उनके मन-परिवर्तन, विश्वास और पूर्ण समर्पण को दर्शाता है।

दोनों घटनाओं का मेल

यूहन्ना का सुसमाचार हमें उनकी पहली मुलाकात और प्रारंभिक विश्वास दिखाता है, जबकि लूका का सुसमाचार हमें वह क्षण दिखाता है जब उन्होंने पूरी तरह समर्पित होकर यीशु का अनुसरण किया।

ये दोनों घटनाएँ एक-दूसरे के विरोध में नहीं, बल्कि एक ही प्रक्रिया के दो चरण हैं।

पतरस और अन्द्रेयास को यीशु ने कब बुलाया?

NURU YA UPENDO www.wingulamashahidi.org | 5

आत्मिक सच्चाई

यह पैटर्न हम बाइबिल में और भी जगह देखते हैं:

परमेश्वर पहले मनुष्य के हृदय को तैयार करता है, फिर उसे बड़ी बुलाहट देता है (जैसे मूसा — निर्गमन 2–3; पौलुस — प्रेरितों के काम 9)।

चेलापन केवल एक संबंध नहीं, बल्कि एक उद्देश्य भी है।

पतरस और अन्द्रेयास पहले यीशु से मिले (यूहन्ना 1), फिर बाद में उन्होंने अपने जीवन को उनके उद्देश्य के लिए समर्पित किया (लूका 5)।

निष्कर्ष

यह कोई विरोधाभास नहीं है, बल्कि यह यीशु की अनुग्रह का सुंदर चित्र है।

पतरस और अन्द्रेयास को यीशु ने कब बुलाया?

NURU YA UPENDO www.wingulamashahidi.org | 6

वह हमें वहीं मिलते हैं जहाँ हम हैं—
पहले हमें अपने पास बुलाते हैं,
फिर धीरे-धीरे हमें उस स्थान तक ले जाते हैं जहाँ हम सब कुछ छोड़कर उनके पीछे चलने के लिए तैयार हो जाते हैं।

ठीक पतरस और अन्द्रेयास की तरह, हमारा आत्मिक जीवन भी अक्सर ऐसे ही बढ़ता है—
पहले जिज्ञासा से शुरू होता है,
फिर संबंध में बढ़ता है,
और अंत में पूर्ण समर्पण तक पहुँचता है।

“आमीन! हे प्रभु यीशु, आ।”

(प्रकाशितवाक्य 22:20)

JIUNGE NA GROUP LETU LA WHATSAPP HAPA >> WHATSAPP GROUP….

Share on:
WhatsApp